OPINION TODAY National Journal of Hindi and Humanities Research
A open Access Peer Reviewed, Referred Journal (Volume 1, Issue 1 (July-SEPTEMBER 2025)
E-ISSN : Applied I Web : www.opiniontoday.co.in I Email : info@opiniontoday.co.in I Mob : 9411218242

सामाजिक सरोकारों और आंदोलनों में सोशल मीडिया की भूमिका

अशोक स्वरुप
पूर्व अथिति प्रवक्ता
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
इलाहबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय

21वीं सदी सूचना प्रौद्योगिकी और संचार क्रांति का युग है। इंटरनेट और डिजिटल मीडिया ने सामाजिक जीवन के हर आयाम को प्रभावित किया है। इस डिजिटल युग का सबसे बड़ा हथियार है सोशल मीडिया, जिसने न केवल व्यक्तिगत संवाद को गति दी, बल्कि सामाजिक सरोकारों और आंदोलनों को भी नई दिशा दी। पहले जहां आंदोलनों का प्रसार अख़बारों, पत्रिकाओं और टेलीविज़न तक सीमित था, वहीं आज फेसबुक, ट्विटर (एक्स), इंस्टाग्राम, यूट्यूब और व्हाट्सऐप जैसे मंच आंदोलन की धड़कन बन चुके हैं। सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, भ्रष्टाचार-विरोध और लोकतंत्र की मजबूती जैसे मुद्दों को लेकर सोशल मीडिया ने जनचेतना जगाने और जनमत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

सामाजिक सरोकार का आशय समाज के सामूहिक हितों, समस्याओं और उनके समाधान से जुड़ी चेतना से है। सोशल मीडिया ने वंचित वर्गों की आवाज़ को मंच प्रदान किया है, जिससे समानता और न्याय की माँग को गति मिली है। पहले सार्वजनिक विमर्श केवल बुद्धिजीवियों तक सीमित रहता था, परंतु अब आम नागरिक भी अपनी राय व्यक्त कर सकता है। किसी भी सामाजिक मुद्दे की जानकारी मिनटों में वैश्विक स्तर तक पहुँच जाती है। यही कारण है कि आज सामाजिक सरोकार और डिजिटल मीडिया एक-दूसरे के पूरक बन चुके हैं।

आंदोलन मूलतः किसी अन्याय, असमानता या मांग के विरुद्ध सामूहिक विरोध और प्रतिरोध है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी के सत्याग्रह से लेकर पर्यावरण-आधारित चिपको आंदोलन और नर्मदा बचाओ आंदोलन तक आंदोलन ज़मीन पर आधारित जनसंघर्ष रहे हैं। किंतु अब इन आंदोलनों की परंपरा सोशल मीडिया के मंचों पर भी दिखने लगी है, जिसे "डिजिटल एक्टिविज़्म" या "हैशटैग मूवमेंट" कहा जाता है। डिजिटल रूपांतरण ने आंदोलनों को अधिक व्यापक और अंतरराष्ट्रीय बना दिया है।

भारत जैसे लोकतांत्रिक और बहुभाषी देश में सोशल मीडिया आंदोलनों की धड़कन बन चुका है। 2011 का अन्ना आंदोलन इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें भ्रष्टाचार-विरोधी स्वर को सोशल मीडिया ने जन-जन तक पहुँचाया और फेसबुक व ट्विटर पर युवाओं की भागीदारी ने इसे राष्ट्रीय स्वरूप दिया। इसी प्रकार 2012 का निर्भया कांड भी सोशल मीडिया पर उमड़े गुस्से के कारण व्यापक सामाजिक आंदोलन में परिवर्तित हुआ, जिसके परिणामस्वरूप कठोर कानून बनाए गए। 2020-21 के किसान आंदोलन ने भी सोशल मीडिया का प्रभावी उपयोग कर अपने मुद्दों को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाया। इसके अतिरिक्त स्वच्छ भारत अभियान जैसे सकारात्मक अभियानों ने भी सोशल मीडिया की मदद से जनभागीदारी सुनिश्चित की।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी सोशल मीडिया की शक्ति निर्विवाद है। अरब स्प्रिंग (2011) में मिस्र, ट्यूनिशिया और लीबिया जैसे देशों के जनांदोलनों में ट्विटर और फेसबुक ने निर्णायक भूमिका निभाई। अमेरिका से शुरू हुआ #MeToo आंदोलन महिलाओं के यौन उत्पीड़न के खिलाफ़ आवाज़ उठाने का सशक्त मंच बना, जिसने भारत सहित अनेक देशों में लैंगिक न्याय का विमर्श तेज़ किया। इसी प्रकार अश्वेत समुदाय के अधिकारों की लड़ाई को सोशल मीडिया पर #BlackLivesMatter हैशटैग ने वैश्विक समर्थन प्रदान किया।

सोशल मीडिया ने आंदोलनों के माध्यम से जनमत निर्माण की प्रक्रिया को भी बदल दिया है। अब एक ट्वीट या पोस्ट लाखों लोगों तक पहुँचकर जनमत तैयार कर सकता है। नागरिक पत्रकारिता के रूप में आम नागरिक भी वीडियो, फोटो और पोस्ट के जरिए घटनाओं को सामने लाता है। इससे सामाजिक मुद्दों पर पारदर्शिता बढ़ी है और सरकारों व प्रशासन के लिए जनमत की अनदेखी करना कठिन हो गया है।

यद्यपि सोशल मीडिया ने आंदोलनों को ऊर्जा दी है, किंतु इसके दुष्परिणाम भी हैं। फेक न्यूज़ और अफवाहें कई बार समाज में भ्रम और हिंसा फैला देती हैं। आंदोलन से जुड़े कार्यकर्ताओं को ट्रोलिंग और साइबर बुलिंग का सामना करना पड़ता है। सतही सक्रियता (Slacktivism) भी एक समस्या है, जिसमें लोग केवल लाइक और शेयर तक सीमित रहते हैं, वास्तविक परिवर्तन की दिशा में सक्रिय भूमिका नहीं निभाते। राजनीतिक दल और आईटी सेल कई बार आंदोलनों को भटकाने तथा जनमत को प्रभावित करने के लिए इस मंच का दुरुपयोग करते हैं।

भविष्य की दृष्टि से देखा जाए तो सोशल मीडिया में अपार संभावनाएँ हैं। सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण और शिक्षा जैसे मुद्दों पर यह मंच मजबूत सहयोगी बन सकता है। डिजिटल साक्षरता बढ़ने से फेक न्यूज़ और भ्रम की समस्या कम होगी। वैश्विक नेटवर्किंग के कारण आंदोलनों का असर सीमाओं के पार जाकर अंतरराष्ट्रीय नीतियों को भी प्रभावित करेगा। सबसे महत्वपूर्ण यह कि नागरिक सहभागिता और पारदर्शिता से लोकतंत्र और सुदृढ़ होगा।

अंततः कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया ने सामाजिक सरोकारों और आंदोलनों को नई शक्ति, नया स्वर और नया विस्तार प्रदान किया है। यह मंच अब केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का औज़ार बन चुका है। हालाँकि इसके दुरुपयोग की चुनौतियाँ भी मौजूद हैं, पर यदि जिम्मेदारी और सत्यनिष्ठा के साथ इसका उपयोग किया जाए तो यह समाज में न्याय, समानता और लोकतांत्रिक मूल्यों को सशक्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

संदर्भ सूची

1. Castells, Manuel. Networks of Outrage and Hope: Social Movements in the Internet Age. Polity Press, 2012.
2. Tufekci, Zeynep. Twitter and Tear Gas: The Power and Fragility of Networked Protest. Yale University Press, 2017.
3. Joshi, Priya. “Role of Social Media in Social Movements in India.” International Journal of Social Science Research, Vol. 7, No. 2, 2021.
4. Bimber, Bruce. Information and American Democracy: Technology in the Evolution of Political Power. Cambridge University Press, 2003.
5. रंजन, संजय. सोशल मीडिया और भारतीय लोकतंत्र. राजकमल प्रकाशन, 2020.
6. शर्मा, नीरज. “डिजिटल एक्टिविज़्म: अवसर और चुनौतियाँ।” समाजशास्त्र समीक्षा, खंड 45, अंक 3, 2022.